Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity - ISSN : 2279-0233
Continuous Issue-31 | August – September 2017

वैदिक साहित्य में प्रतिबिम्बित रुद्र का स्वरूप

***भूमिका-**

भारतीय संस्कृति का मूल- आधार है धर्म। और दूसरा आधार है दर्शन। धर्म की घरोहर पर यह संस्कृति बिराजमान है। वैदिक धर्म में विभिन्न देवताओ की पूजन-अर्चन विधि होती थी। जिन में शिवजी के रूद्रवतार का भी बडा मनोरम वर्णन आता है। प्रस्तुत लेख में हम साहित्य में प्रतिबिम्बित रूद्र का प्राथमिक परिचय देखेंगे।

***रूद्र-शब्द व्युत्पत्ति**

रूद्र की व्युत्पत्ति रूद्र अर्थात् रोना धातु से हुई है। शतपथबाहमण मे रूद्रकी उत्पत्तिकी कथा आती है। प्रजापति ने जब सृष्टि का सजर्न करना आरंभ किया तब एक कुमार का जन्म हुआ और जनमते ही अपने नामकरण के लिए रोने लगा। जन्म के साथ रोदन क्रिया का सम्बन्ध होने के कारण उस कुमार का नाम रूद्ररखा गया।

यदरोदीत् तस्मात् रूद्र। 1. इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद् में दशों इन्द्रियों तथा मन को एकादश रूद्र

के रूप में ग्रहण किया गया है। (2) ते यदस्माच्छरीरान्मर्त्यादुत्क्रामन्ति अथ रोदयन्ति।

तद् यद् रोदयन्ति तस्माद्रुदा इति।।(3)

जब ये शरीर को छोडकर बाहर निकल जाते है, तो मृतक के सगे सम्बन्धियों को रुलाते है।

***पाश्चात्य विद्वानो की दृष्टि मे रूद्र-**

पाश्चात्य वेदानुशीली विद्वानो ने रूद्र के प्राकृतिक आधार को ढूँढ निकालने का विशेष परिश्रम किया है। डॉ. वेबर रूद्र को तूफान का देवता मानते है। डॉ. आदेर के विचार मे मृतात्माओं के प्रधान व्यक्ति को देवत्व का रूप प्रदान कर रूद्र मान लिया गया है, क्योकिं यह वर्णन अनेक स्थलो पर मिलता है कि मृतको की आत्माएँ आँधी के साथ उडकर ऊपर जाती है। डॉ.हिलेवान्त की सम्मति में ये ग्रीष्मकाल के देवता हैं तथा किसी विशिष्ट नक्षत्र से भी इनका सम्बन्ध है।(4)

वेदों मे दर्शित रूद्र- स्वरूप-

ऋग्वेद में प्रथम मण्डल का 224वाँ सूक्त द्वितियमण्डल का 33वाँ सूक्त तथा 7 मण्डलका 46वाँ सूक्त रूद्र के विषयमें लिखे हुए मिलते है। इनकें अतिरिक्त अन्य देवताओं के साथ रूद्र का नाम लगभग 50 बार आता है। यजुर्वेद की अनेक संहिताओ में थोडे बहोत अन्तर के साथ रुद्राध्याय उपलब्ध होता

हैसंहिता का 26वाँ अध्याय रूद्राध्याय के नाम से विख्यात है। अथर्ववेद के 22 काण्ड के द्वितीय सूक्त में रूद्रदेवकी स्तुति की गई है।

रूद्र के हाथ तथा बाहु है। (5) उनका शरीर अत्यन्त बलिष्ठ है। उनके ओठ अत्यत रमणीय है। मस्तक पर बालों का एक जडाजूट है जिसके कारण वे कपर्दी कहलाते है। (6) रूद्र का रंग भूरा है तथा आकृति दैदीप्यमान है। उनके स्थिर अङ्ग चमकनेवाले सोने के गहनों से विभूषित है। वे रथ पर सवार होते है। यजुर्वेद अनुसार रूद्र के मुख चक्षु, त्वच्, अङग,उदर,जिह्वा तथा दातो का उल्लेख किया गया है।(7) उनके सहस्त्र नेत्र है, गर्दन का रंग नीला, परन्तु उनका कण्ठ उज्जवल रंगका है। नमो नीभग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।।(8) उनके माथे पर जटाजूट का वर्णन भी है। उनके केश लाल या नीले रंग के है। वे माथे पर पगडी पहननेवाले है, शरीर रा रंग कपिल है। ऋग्वेद में रूद्र क्रुर बतलाए गए है। वे स्वर्गलोक के रक्तवर्ण(अरूष) वराह है। (9) वे सबसे श्रेष्ठ वृक्षभ है, वे तरूण हैं और उनका तारुण्य सदा टिकने वाला है। वे शूरों के अधिपति हैं। उन्हे न मानने वालो का विनाश और उनके उपासक मनुष्यों के लिए वे अत्यन्त उपकारी हैं। इसलिए वे 'शिव' नाम से भी पुकारे जाते हैं। रूद्र मरूतो के पिता है।(10) इस विषय में षडगुरु-शिष्य ने 'सर्वानुक्रमणी' की 'वेदार्थदीपिका' में रोचक आख्यान दिया बै। इसी प्रसङग को लेकर द्या द्विवेद ने नीतिमञ्जरी मे यह उपदेश दिया है–

दष्टवा परव्यथां सन्त उपकुर्वन्ति लीलया।
दितेर्गर्भव्थां हत्वा रूद्रोडभून्मरूतां पता।।

रूद्र के स्तुति का मन्त्र सुप्रसिध्ध है, जो नीचे दीया गया है।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारीकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माडमृतात्।। (11)

त्र्यम्बक यानि तीन नेत्रवाला एसा अर्थ भाष्यकारो ने किया है। वैदिक काल के अनन्तर रूद्र की पत्नि के लिये प्रयुक्त 'अम्बिका' शब्द का प्रथम प्रयोग वाजसनेयी संहिता मे आता है, परन्तु यह नाम उनकी भगिनी का नाम बतलाया जाता है।

एष ते रूद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया।
त्वं जुषष्व स्वाहैष ते रूद्र भाग आखुस्ते पशुः।।(12)

रूद्र की पत्नि को पार्वती नाम तैतरीय आरण्यक में और 'उमा हैमवती' नाम केनोपनिषद् में प्रयुक्त है। अथर्ववेद में रूद्र का वर्णन आता है जिसमे रूद्र जगत के समग्र पदार्थो के स्वामी है। वे अन्नोके, खेतो के, वनो के अधिपति है। अथर्ववेद में रूद्रके नामो मे भव,शर्व,पशुपति, तथा भूतपति दर्शित हैं। (13) पशुपति का तात्पर्य केवल पशुओं पर आधिपत्य इतना नही बल्कि प्रत्युत 'पशु' के अन्तर्गत मनुष्यो की भी गणना अथर्ववेद को मान्य है-

तवेमे पञ्ज पशवो विभक्तागावो अश्वाः पुरूषा अजावयः।।(14)

रूद्रका निवास अग्नि में, जलमे, औषधियों तथा लताओं में ही नही है,बल्कि उन्होने इन समस्त भुवनों की रचना कर इन्हे सम्पन्न बनाया है । -

यो आग्नौ रूद्रो य अप्स्वन्त यं ओषधीर्वारूध आ विवेश।
य इमा विश्वाभुवनानिचाक्लृरो तस्मै रूद्राय नमो अस्त्वग्नये।।(15)

इस तरह रूद्र की महता प्रतिपादित होती है।

उपनिषदों में दर्शित रूद्र- स्वरूप-

उपनिषदों मेरूद्र की अधिक प्रधानता है।छान्दोग्य (3-7-4), बृहदारण्यक(3-9-4),श्वेताश्वतर(3-2-4) इत्यादि में रूद्र के प्रभाव एवं वैभव वर्णित है। एको रूद्र न द्वितीयाय तस्थुः। (16)

रूद्रकी एकता, जगन्निर्माण में निरपेक्षता, विश्व के आधिपत्य, महर्षित्व तथा देवताओं के उत्पादक-ऐश्वर्य वर्णन यहाँ है।

यो देवानां प्रभवश्चोदभवश्च
विश्वाधिपो रूद्रो महर्षिः ।
हिरण्यगर्भ जनयामास पूवँ
स नो बुध्दया शुभया संयुनक्तु।।(17)

अवान्तरकालीनउपनिषदोंमेंअनेकस्थलपर रूद्र-शिव की प्रभुता, महनीयता, अद्वितीयता का दर्शन होता है। अतः अथर्वशिर कठरूद्र, रूद्रहृदय, पाशुपत ब्रह्म आदि शिव परक उपनिषदों के नामोल्लेख मात्र से हमें यहाँ सन्तोष करना पडता है।

***अग्नि के प्रतीक रूप रूद्र–**

अग्नि के दृश्य, भौतिक आधार पर रूद्र की कल्पना खडी की गई है। अग्नि की शिखा ऊपर उठती है। अतः रूद्र के ऊर्ध्व लिङ की कल्पना की गई है। अग्नि वेदी पर जलते है। इसी कारण शिव जलघारी के बीच में रखे जाते है। अग्नि में धृत की आहुति दी जाती है। इसलिये शिव के ऊपर जलसे अभिषेक किया जाता है। शिव भक्तों के लिये भस्म धारण करने की प्रथा को भी स्वारस्य इसी सिद्धान्त के मानने से भलीभाँति हो जाता है। इस सिद्धान्त के पोषक वैदिक प्रमाणों पर ध्यान देते 'त्वमग्ने रूद्रो' (ऋ-2-1-6) में एकीकरण का संकेत मिलता है।

'तस्मै रूद्राय नमो अस्त्वग्नये ।'(18) रूद्रकी आठ मूर्तियाँ, आठ भौतिक पदार्थो की प्रतिनिधि है।

अग्निर्वै स देवः। तस्यैतानि नामामि शर्व इति यथा प्राच्या आचक्षते। भव इति यथा बाहीकाः, पशुनां पति रूद्रोडग्निरिति तान्यस्याशान्तान्येवेतराणि नामानि, अग्निरित्येव शान्ततमम्।।(19)

इस तरह रूद्र के विविध नाम है।

मा नः सं स्त्रा दिव्येनाग्निना।अन्यत्रास्मद विधुतं पातयैताम्।।(20)

रूद्रके 'शिवत्व' को भलिभाँति हम पहचान सकते हैं। वह भयानक पशु की भाँति उग्र तथा भयद् अवश्य है, परन्तु साथ हीसाथ अपने भक्तो को विपत्तियों से बचाता है।

सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर प्रलय में भी सृष्टि के बीज निहित रहते है, संसार में भी उत्पत्ति का निदान अन्तर्हित रहता है। महाकवि कालिदास को अग्नि की सहारकारणी शक्ति में भी उपादेयता दीख पडती है-

कृष्यां दहन्नपि खलु क्षितिभिन्धनेध्दो।

बीज प्ररोह जननीं ज्वलनः करोति।। (21)

अतः उग्र रूप के हेतु से जो देव 'रूद्र' है, वे ही जगत् के मंगल साधन करने के कारण 'शिव' है।जो रूद्र है, वही शिव है। जो संसार का कल्याण करता हैं ।

*** रूद्राध्याय अनुसार रूद्र-**

रूद्राध्याय अनुसार रूद्र एक बलवान सुसज्जित योद्धा के रूप में हमारे सामने आते है। उनके हाथ में घनुष तथा बाण हैं। उनके धनुष का नाम 'पिनाक' है।(22) उनका धनुष सोने का बना हुआ, हजारो आदमियों को मारनेवाला सैंकडो बाणों से सुशोभित तथा मयूरपिच्छ से विभूषित बतलाया गया है- धनुर्बिभर्षि हरितं हिरण्यं सहस्त्रध्नि शतवधं शिखण्डिनम् (23) उनके हाथमे तलवार चमकती हैं। वे वज्र भी धारण करते है। वज्रका नाम सृक हैं। (24) माथे की रक्षा करने के लिये वे शिरस्त्राण धारण करते हैं और देह के बचाव के लिये कवच तथा वर्म पहनते है । वे धनुष पर बाण हंमेशा चढाए रहते हैं। इसलिए उनका नाम है- आततायी। इनके अस्त्र-शस्त्र इतने भयानक है कि ऋषि इनसे बचने के लिए सदा प्रार्थना किया करते हैं-

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवान् उत।

अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङगधिः।।(25)

रूद्राध्याय में इस तरह रूद्र का विलक्षण वर्णन किया गया हैं।

उपसंहार-

साहित्य में प्रतिबिम्बित रूद्र का स्वरूप देखते हमें वैदिक साहित्य में रूद्र का विशेष महत्व दिखाई पडता हैं। पाश्चात्य विद्वानो की दृष्टि में अलग छवी प्रतिबिम्बित हैं । वेदो में, उपनिषदो में, रुद्राध्याय में जीस तरह रुद्र का वर्णन है, उसी तरह अन्य कालिदास जैंसे कवियों ने भी अपने साहित्य में शिव को स्थान दिया हैं। साहित्य में अधिकांश शिव और उनके स्वरूप हमें प्रतिबिम्बित हुए दिखाई देते है जो शिव की महत्ता प्रतिपादित करते हैं।

संदर्भ सूचि

1. शतपथ ब्राह्मण(6-1-3-8)

2. बृहदारण्यक उपनिषद् (3-9-4)

3. ऋग्वेद (1-114-1)

4. रिलिजन एन्ड फिलोसोफी ओफ वेद-(पृ. 146-7 ए.बी. कीथ)

5. ऋग्वेद (2-33-10)

6. ऋग्वेद (1-14-1)

7. अथर्ववेद (11-2-5,6)

8. शुकल- यजुर्वेद (16- 28)

9. ऋग्वेद (1-114-5)

10. ऋग्वेद (1-114-6)

11.ऋग्वेद (7-53- 14)

12. शुकल यजुर्वेद (3- 57)

13.अथर्ववेद (11-2-1)

14. अथर्ववेद (11-2-9)

15.अथर्ववेद (7-83)

16. श्वेताश्वर उपनिषद् (3-2)

17.श्वेताश्वर उपनिषद् (3-4)

18. अथर्ववेद (7-83)

19.शतपथ (1-7-3-8)

20. अ- (11-2-26)

21. रधुवंशम् (9-80)

22. शुक्ल यजुर्वेद (16-51)

23. अ-(1-2-12)

24. शुक्ल यजुर्वेद (16-21)

25.शुक्ल यजुर्वेद (16-10)

****

Dr. Naresh G. Vanzara
Assistant professor
Dept. of Sanskrit
Shri N.K.Maheta & Smt.M.F.Dani Arts College
Malvan

Copyright © 2012 - 2017 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat